DR. SUMAN LAL RAY
Assistant Professor,
Deptt. of Sanskrit,
S.R.A.P. College, Bara.
Chakia, East Champaran

B.A. (Hons.), Part – II
Subject – Sanskrit
Paper – IV

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (प्रथमोऽङ्कः)

श्लोक 9 का अन्वय सहित हिन्दी अनुवाद

श्लोक सं० – 22

क: पौरवे वसुमतीं शासति शासितरि दुर्विनीतानाम् ।
अयमाचरत्यविनयं मुग्धासु तपस्विकन्यासु ॥

अन्वय:

दुर्विनीतानां शासितरि पौरवे वसुमतीं शासति (सति)
क: अयं मुग्धासु तपस्विकन्यासु अविनयम् आचरति ।

अनुवाद

दुष्टों का दमन करनेवाले पुरुवंशी राजा दुष्यन्त के पृथ्वी पर शासन करते रहने पर भी यह कौन है जो भोली-भाली तपस्वि-कन्याओं के साथ अशिष्ट व्यवहार करता है।

Scanned by TapScanner